[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3887 A

Unique Paper Code : 62051202

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : B.A. (Prog.) Hindi CBCS

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नीचे दिए गए पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(क) करता था तौ क्यूँ रह्या, अब करि क्यूँ पछताइ।
बोवै पेड़ बबूल का, अंब कहाँ तैं खाइ
जैसी मुख तैं नीकसै, तैसी चालै नाहिं
मानिष नहीं ते स्वान गति, बांध्या जमपुर जाहिं।।

P.T.O.

अथवा

साजि चतुरंग-सैन अंग में उमंग धारि, सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।

भूषण भनत नाद-बिहद नगारन के, नदी-नद मद गैबरन के रलत है।

ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल गैल, गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है।

तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि, थारा पर पारा पारावार यों हलत है।।

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।

जा तन की झांई परै, स्याम हरित-दुति होइ।।

फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु, टूटी लाज की लाव।

अंग-अंग छबि में, भयौ भौंर की नाव।।

अथवा

असंख्य कीर्ति-रश्मियां विकीर्ण दिव्य दाह-सी !

सपूत मातृभूमि के - रुको न शूर साहसी !

अराति सैन्य सिंधु में, सुबाड़वाग्नि से जलो !

प्रवीर हो जयी बनो - बढ़े चलो, बढ़े चलो !

(ग) तुंग हिमालय के कंधों पर
छोटी-बड़ी कई झीलें हैं,
उनके श्यामल नील सलिल में
समतल देशों से आ-आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्ष्त-मधुर विष-तंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।

अथवा

अनुभव से समृद्ध होने की बात तुम मत करो
वह तो सिर्फ अद्वितीय जन ही हो सकते हैं
अद्वितीय यानी जो मस्ती में रहते हैं चार पहर
केवल कभी चौंककर
अपने कुएँ में से झाँक लिया करते हैं
वह कुआँ जिसको हम लोग बुर्ज कहते हैं

2. जयशंकर प्रसाद **अथवा** नागार्जन का साहित्यिक परिचय दीजिए।

(10)

3. कबीर की काव्य-भाषा पर विचार कीजिये । (10)

अथवा

भूषण की राष्ट्रीय चेतना का विवेचन कीजिये ।

4. बिहारी की बहुज्ञता पर प्रकाश डालिये ।

अथवा

'कला क्या है' कविता के आधार पर रघुवीर सहाय के कला-संबंधी विचारों का परिचय दीजिए ।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :

(i) हिंदी भाषा का परिचय

(ii) पूर्वी हिंदी

(iii) संत साहित्य

(iv) प्रगतिवाद

(v) राजभाषा